चार धाम यात्रा में तीर्थयात्रियों की सुरक्षा चुनौतियाँ

प्रिलिम्स के लिये:

चार धाम परियोजना, चार धाम यात्रा, फ्लैश फ्लड, भूस्खलन

मेन्स के लिये:

आपदा प्रबंधन चुनौतियाँ

चर्चा में क्यों?

हिमालय क्षेत्र में स्थित चार पवित्र हिंदू तीर्थस्थलों की यात्रा अर्थात् चार धाम यात्रा के दौरान इस वर्ष **बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की मृत्यु** हुई।

- आधिकारिक आँकड़ों के अनुसार, अप्रैल 2023 में यात्रा शुरू होने के बाद से 149 तीर्थयात्रियों की मृत्यु हो गई है जिनमें से **अधिकतर मौतों का कारण हृदय गति रुकना और अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ** हैं। यह यात्रा जो कि प्रत्येक वर्ष लाखों तीर्थयात्रियों को आकर्षित करती है, सड़क दुर्घटनाओं और भूस्खलन के कारण भी प्रभावित हुई है।

चार धाम यात्रा:

- **परिचय:**
  - **भारत के उत्तराखंड राज्य** में चार धाम यात्रा एक पवित्र तीर्थयात्रा है।
  - इस यात्रा में हिमालय में स्थित चार पवित्र हिंदू तीर्थस्थलों का भ्रमण शामिल है।
    - इस यात्रा में शामिल चार पवित्र धाम- **बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री** शामिल हैं।
    - ऐसा माना जाता है कि **चार धाम यात्रा को दक्षिणावर्त दिशा में पूरा** करना चाहिये- यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ।
- **धार्मिक महत्त्व:**
  - इनमें से प्रत्येक तीर्थस्थल **हिंदू धर्म में धार्मिक और पौराणिक महत्त्व** रखता है।
  - ऐसा माना जाता है कि चार धाम यात्रा करने से व्यक्ति के सभी पाप समाप्त हो जाते हैं तथा आध्यात्मिक मुक्ति मिल जाती है।
- **तीर्थयात्रा का समय:**
  - आमतौर पर यात्रा **अप्रैल या मई माह में शुरू** होती है तथा मौसम की स्थिति के आधार पर **नवंबर तक जारी** रहती है।
  - यात्रा में चुनौतीपूर्ण उच्च पहाड़ी क्षेत्रों में ट्रैकिंग शामिल है।
- **आर्थिक महत्त्व:**
  - यह न केवल एक धार्मिक यात्रा है, बल्कि उत्तराखंड के लिये एक **महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक और पर्यटन कार्यक्रम भी है**, जो पूरे भारत और दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करती है।
  - यह **स्थानीय समुदायों के लिये बहुत महत्त्वपूर्ण है**, जो रोज़गार के अवसर प्रदान करती है और क्षेत्र में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देती है।

[//](#)

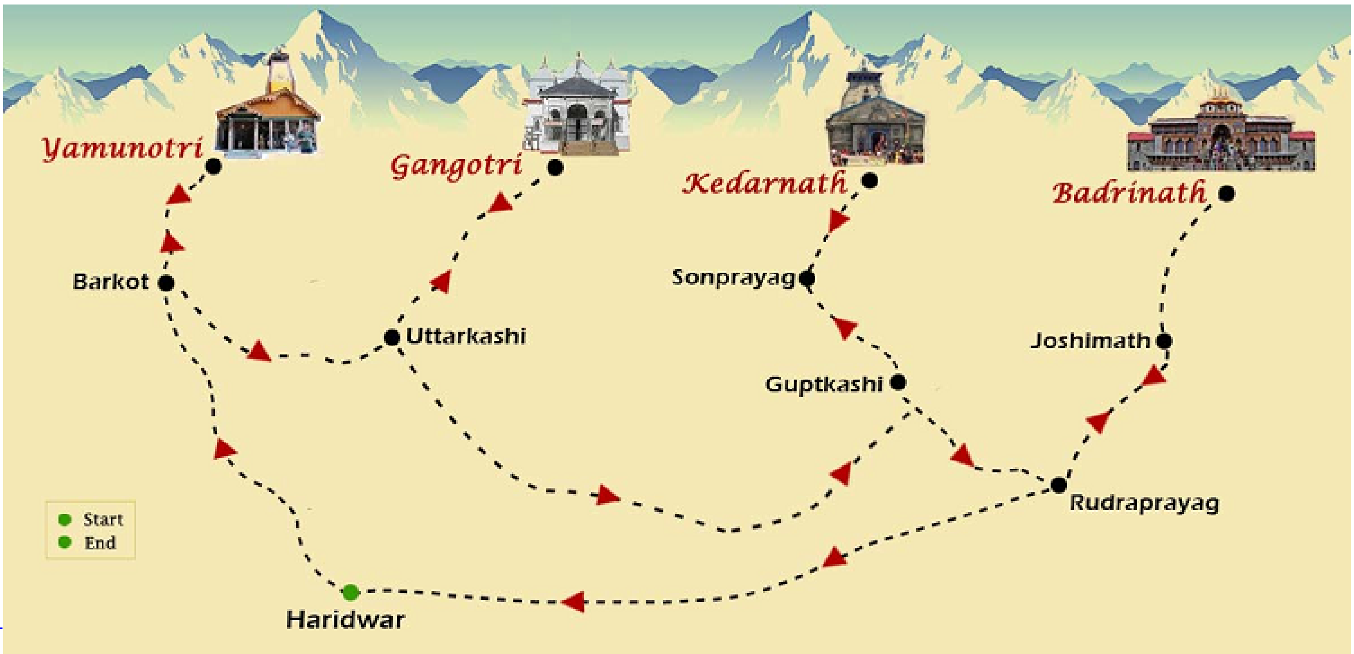

- **टिप्पणी:**
    - **यमुनोत्री धाम:**
        - स्थान: ज़िला उत्तरकाशी
        - समर्पित: **देवी यमुना**
        - **गंगा नदी के बाद [यमुना नदी](#) भारत की दूसरी सबसे पवित्र नदी है।**
    - **गंगोत्री धाम:**
        - स्थान: ज़िला उत्तरकाशी
        - समर्पित: **देवी गंगा**
        - [**गंगा नदी**](#) सभी भारतीय **नदियों में सबसे पवित्र मानी जाती है।**
    - **केदारनाथ धाम:**
        - स्थान: ज़िला रुद्रप्रयाग
        - समर्पित: **भगवान शिव**
        - [**मंदाकिनी नदी**](#) के तट पर स्थित है।
        - भारत में **12 [ज्योतिर्लिंगों](#) (भगवान शिव के दिव्य प्रतिनिधित्व) में से एक**।
    - **बद्रीनाथ धाम:**
        - स्थान: ज़िला चमोली
        - पवित्र **बद्रीनारायण मंदिर**
        - समर्पित: **भगवान विष्णु**
        - **वैष्णवों के पवित्र तीर्थस्थलों** में से एक।
- **चार धाम परियोजना:**
    - [**चार धाम परियोजना**](#) भारतीय राज्य उत्तराखंड में एक प्रमुख बुनियादी ढाँचा योजना है।
    - इसका उद्देश्य चार पवित्र हिंदू स्थलों, जिन्हें चार धाम के नाम से जाना जाता है, तक**कनेक्टिविटी और तीर्थ पर्यटन में सुधार करना है।**
    - इससे उत्तराखंड में **पर्यटन, व्यापार, परिवहन और रोज़गार के अवसरों को बढ़ावा** मिलने की उम्मीद है।
    - तीर्थयात्रियों की सुरक्षा बढ़ाना और सीमावर्ती क्षेत्रों में सैन्य अभियानों को मज़बूत करना।
    - आपात स्थिति में **आपदा प्रबंधन और राहत कार्यों को** सुविधाजनक बनाना।

चार धाम यात्रा की आपदा प्रबंधन चुनौतियाँ:

- आपदा प्रबंधन चुनौतियाँ:
  - **कठोर मौसम की स्थितियाँ:**
    - **अत्यधिक तापमान: ठंडे तापमान** के संपर्क में आने से **हाइपोथर्मिया** और अन्य स्वास्थ्य संबंधी जटिलताएँ हो सकती हैं
    - **हिमपात: यह** तीर्थयात्रा मार्गों पर फिसलन के साथ परिवहन संचालन को कठिन बना देता है।
  - **संवेदनशील भू-भाग:**
    - **पर्वतीय क्षेत्र: खड़ी ढलानें तथा ऊबड़-खाबड़ भू-भाग** आधारभूत ढाँचे के विकास एवं रखरखाव के लिये चुनौतियाँ उत्पन्न करते हैं।
    - **दूरस्थ स्थान: चिकित्सा सुविधाओं,** आपातकालीन सेवाओं तथा **संचार नेटवर्क** तक सीमित पहुँच।
    - **सीमित निकासी मार्ग:** किसी **आपदा या आपातकालीन चिकित्सा** की स्थिति में **दूरदराज़ के क्षेत्रों से तीर्थयात्रियों को निकालना चुनौतीपूर्ण** हो जाता है।
  - **स्वास्थ्य संबंधी खतरे:**
    - **ऊँचाई वाले क्षेत्रों में स्वास्थ्य समस्या:** तीर्थयात्रियों को ऊँचाई वाले क्षेत्रों में **चक्कर आना, मतली तथा साँस लेने में कठिनाई आदि समस्याएँ** हो सकती हैं।
    - **कठिन ट्रेक:** लंबी एवं कठिन पैदल यात्रा, विशेष रूप से अधिक **ऊँचाई शारीरिक थकावट तथा चोटों का कारण** बन सकती है।
    - **अनुकूलन का अभाव:** तीर्थयात्रियों के लिये उच्च ऊँचाई तथा कठोर मौसम की स्थिति में समायोजित होने के लिये अपर्याप्त समय।
  - **प्राकृतिक आपदाएँ:**
    - **भूस्खलन: अस्थिर ढलानों तथा भारी वर्षा** से भूस्खलन का खतरा बढ़ जाता है, जिससे तीर्थयात्रा मार्ग बाधित हो जाता है।
    - **आकस्मिक बाढ़:** अचानक एवं तीव्र वर्षा के परिणामस्वरूप अचानक बाढ़ आ सकती है, जिससे नदियों तथा नालों के समीप तीर्थयात्रियों के लिये खतरा उत्पन्न होता है।
      - जून 2013 में **केदारनाथ** में अचानक आई **बाढ़** के कारण हज़ारों तीर्थयात्रियों की मृत्यु हो गई, साथ ही कई लोग यहाँ फँसे रह गए।
    - **भूकंप:** उत्तराखंड भूकंपीय क्षेत्र की दृष्टि से एक संवेदनशील क्षेत्र है, जिसके कारण भूस्खलन तथा आधारभूत ढाँचे को हानि होती है।
- **निवारक उपाय और न्यूनीकरण रणनीतियाँ:**
  - **मौसम निगरानी और पूर्व चेतावनी प्रणाली:**
    - मौसम में **परिवर्तन पर दृष्टि रखने तथा गंभीर मौसम की घटनाओं के लिये पूर्व चेतावनी प्रणाली लागू** करने हेतु तीर्थयात्रा मार्ग पर मौसम निगरानी स्टेशन स्थापित करना।
  - **अवसंरचना विकास और रख-रखाव:**
    - इसके अंतर्गत **सड़कों के बुनियादी ढाँचे में सुधार** (सड़कों को चौड़ा करना और मज़बूत करना) **भूस्खलन संभावित क्षेत्रों में सुरक्षात्मक अवरोधों का निर्माण करना** तथा आसान व सुरक्षित यात्रा के लिये **सार्वजनिक-निजी भागीदारी को प्रोत्साहित** करना शामिल है।
  - **मृदा अपरदन और भूस्खलन को रोकना:**

        - **मिट्टी के कटाव और भूस्खलन को रोकने के लिये ढलान स्थिरीकरण तकनीक** /स्लोप स्टेबलाइज़ेशन टेक्नीक का इस्तेमाल तथा **वनीकरण कार्यक्रम** लागू करना।
    - **आपातकालीन और चिकित्सा सुविधाएँ:**
        - **इसमें मार्गों पर चिकित्सा सुविधाएँ और आपातकालीन प्रतिक्रिया केंद्र की स्थापना** , संचार नेटवर्क में सुधार तथा **चिकित्सा कर्मचारियों व आपात काल में सेवा प्रदान करने वालों को प्रशिक्षण** प्रदान करना शामिल है।
    - **तीर्थयात्री सुरक्षा और जागरूकता:**
        - **यात्रा-पूर्व अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन कर मार्ग की विस्तृत जानकारी** प्रदान करना और **तीर्थयात्रियों के लिये चिकित्सा जाँच की अनिवार्यता को प्रोत्साहित** करना।
    - **आपदा प्रतिक्रिया और निकासी योजनाएँ:**
        - **व्यापक आपदा प्रतिक्रिया योजनाएँ विकसित करना,** सुरक्षित असेंबली पॉइंट और अस्थायी आश्रयों को नामित करना तथा आपदा से बचाव की तैयारी सुनिश्चित करने के लिये नियमित मॉक ड्रिल/अभ्यास का आयोजन करना।

स्रोत: द हिंदू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/pilgrim-safety-challenges-in-char-dham-yatra